।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाश : 01565-224600,224900
ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

त्याग से :ाांति की प्राप्ति संभव - युवाचार्य महाश्रमण

श्रीडूँगरगढ़ 13 जनवरी : तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण मे जनभेदनी को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने अपने दैनिक प्रवचन में गीता व उत्तराध्ययन का तुलनात्मक विवेचन किया। उन्होनें ने कहा कि दुनियां में हर व्यक्ति :ाांति चाहता है। गीता के 12वें अध्याय में :ाांति के महत्व को उजागर किया गया है। वहां पांच बाते बताई गयी है- 1. अभ्यास 2. ज्ञान 3. ध्यान 4. कर्मफल 5. :ाांति । साधना के क्षेत्र में अभ्यास का महत्व है ज्ञान को अभ्यास से अच्छा माना गया है। उत्तराध्ययन मे भी कहा गया है ज्ञान के द्वारा आदमी पदार्थ को जान लेता है। ध्यान की उच्च भूमिका ज्ञान से भी श्रेश्ठ है। जैन द-र्न में यह स्वीकार किया गया है कि कुछ मिनटों का :ाुद्ध ध्यान व तेले के तप को समान मूल्य दिया गया है। ध्यान से अधिक अच्छी है त्याग की चेतना। फल की आकांक्षा का त्याग कर देना चाहिए। त्याग :ाांति का कारण बनता है। मुनि बच्छराज जी ने गीत लिखा :ाांति गिरि कदराओं के नहीं, मंदिर-मस्जिद के नहीं, धरा-अंबर पर नहीं बल्कि ह्रदय के अंदर है। ध्यान लगाकर देखो भगवान तुम्हारे भीतर है। यहां पर भी ज्ञान, ध्यान व :ाांति की बात आ गई है।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि जैन द-र्न में तीन :ाल्य माने गये है- 1. माया :ाल्य 2. निदान :ाल्य 3. मिथ्या :ाल्य हैं। निदान का अर्थ है तपस्या को बेच देना। तपस्या के केवल निर्जरा के लिये करें। भौतिक आकांक्षा के लिये तपस्या करना तपस्या को बेचने के समान है। आचार्य भारीमल जी के जीवन चरित्र के प्रसंग सुनाते हुए बताया कि उदयपुर के महाराणा भीमसिंह जी ने उदयुपर पधारने की प्रार्थना की थी। गंगा-ाहर के मुमुक्षु पवन बरड़िया को आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य माहश्रमण व डागा मुनि प्रतिक्रमण सीखने अनुमति प्रदान की गई। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

सावित्री जिंदल ने आचार्य महाप्रज्ञ के द-र्न किये

हरियाणा विधानसभा सदस्य एवं उधोगपति सावित्री जिंदल ने आज राश्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के द-र्न कर आ-ार्वाद लिया। सावित्री जिंदल ने हरियाणा की राजनीति एवं सामाजिक स्थितियों की जानकारी दी। आचार्य महाप्रज्ञ ने श्रीमति जिंदल की श्रद्धाभक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि जिंदल परिवार ने धर्मसंघ की बहुत सेवा की है। इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण ने अपने द्वारा धनी लोगों को दिये जाने वाले पराम-र्ा का उल्लेख करते हुए कहा कि धन का अहंकार नहीं होना चाहिए। धन के प्रति मोह नहीं होना चाहिए और धन का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के उपसंरक्षक रिद्धकरण लूणिया, महामंत्री भीखमचंद पुगलिया ने साहित्य के द्वारा सावित्री जिंदल, हरियाणा कांग्रेस के महामंत्री भूपेन्द्र सिंह गजवा आदि का सम्मान किया। श्रीमति सावित्री जिंदल ने महाप्रज्ञ कल्याण केन्द्र के तेरापंथ भवन में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एवं मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा से विभिन्न मुद्दों पर मार्गद-र्न लिया। इस अवसर पर स्वयं सेवक व्यवस्था के संयोजक मनोज पारख, सहसंयोजक तेजकरण चौरड़िया उपस्थित थे।

सादर प्रका-नार्थ : -

मीडिया संयोजक /सहसंयोजक